© 2019 IJSRSET | Volume 6 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Engineering and Technology

वैश्विक हिंसा के दौर में बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता

डा0 विपिन कुमार नीरज
एसोसिएट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान), उपाधि स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पीलीभीत, उत्तर प्रदेश।

वर्तमान समय में आंतकवाद विश्व के लिए एक गंभीर समस्या बन गया है। धार्मिक एवं राजनीतिक स्वार्थो की पूर्ति के लिए सार्वजनिक हिंसा सामूहिक हत्याएं की जा रही हैं। वैश्विकरण की अवधारणा ने भी आतंकवाद को बढ़ाया है। उपनिवेशवाद राष्ट्रीयता की पहचान संसाधनों की कमी, नीति निर्धारकों की अवहेलना प्रमुख कारण के रूप में सामने आ रहे हैं। वैश्विकरण की आर्थिक अवधारणा ने सभी देशों की राजनैतिक सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक व्यवस्था को प्रभावित किया है। इराक, पकिस्तान, सीरिया, सुडान, लीबिया, अफगानिस्तान आतंक के गढ़ बन चुके हैं। द्वितीय विश्व के बाद वैचारिक स्तर पर शुरू हुई प्रतिद्वन्दिता ने हिंसा को बढ़ावा ही दिया। 1991 में समाप्त हुए शीत युद्ध के बाद वैश्विक आतंकवाद के रूप में एक नई समस्या ने जन्म ले लिया है। जिससे बचने का उपाय ढूंढा जा रहा है। आज इस समस्या की जद में अमेरिका, रूस, फ्रांस ब्रिटेन जैसे शक्तिशाली देश भी आ गये है। भारत तो लगातार से प्रभावित हो।

अफ्रीकी देश रवाण्डा में हुती और तुत्सी जातियों के बीच छिड़े युद्ध में लाखों मारे गये। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में भी जाति के आधार पर उत्पीड़न जारी है। समय–समय पर जातीय नरसंहार की घटनाएं होती है। जिस तरह गुलाम भारत में ब्रिटिश अपनी नस्लीय श्रेष्ठता बनाए रखना चाहते थे। उसी तरह हिन्दू भी अपनी जातीय श्रेष्ठता बनाए रखना चाहते है। जो उनके शास्त्रों द्वारा प्रमाणित है। जातिवाद ने हमारे समाज और पुर लोकतंत्र के भविष्य को खतरे में डाल दिया है। मुस्लिम देशों में शिया–सुन्नी विवाद लाखों लोगों की बलि ले चुका है। इन समस्याओं के मूल में धर्म की कट्टरवादी अवधारणा और इसका प्रचार–प्रसार करने वाले धर्मगुरू भी है। जिन्होनें गलत व्याख्याएं प्रस्तुत कर हिंसा को प्रोत्साहित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हमारे देश में भी धार्मिक कट्टरता और असहिष्णुता बढ़ी है। मुस्लिम देश आज भी अपने को बदलने के लिए तैयार नहीं है। जब तक उनकी सोच मजहब की कट्टरता अवधारणा पर आधारित होगी तब तक उनका सोच मजहब की कट्टरवादी अवधारणा पर आधारित होगी तब तक उनका टकराव विश्व के अन्य समूहों और शक्तियों से होता रहेगा। धर्म का प्रयोग जब राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के लिए किया जाने लगता है। तब वह साम्प्रदायिक स्वरूप ग्रहण कर लेती है। अपने धर्म के प्रति आस्था और दूसरे के धर्म के प्रति विद्वेष तेजी से बढ़ा है।

धर्म तर्क वितर्क और बुद्धि विवेक का नहीं वरन् अंधविश्वास, अंधश्रद्धा का विषय बन गये हैं। मामूली सी बात पर लोगों की भावनांए भड़क जाती है। धार्मिक आधार पर पर खड़े किये गये आतंकवादी संगठन अब उन्हीं देंशों को बर्बाद करने में लगे हैं जिन्होने इसे प्रोत्सहित किया था। रंग भेद व नस्लीय श्रेष्ठता की विचारधारा आज भी सभ्य समाज के मूंह पर कालिख है जो अभी तक अपना अस्तित्व बनाए हुए है। जबकि इसी नस्लीय श्रेष्ठता की अवधारणा ने दुनिया को द्वितीय विश्व युद्व में झोंक दिया था। अमेरिका फ्रांस, ब्रिटेन में आज भी इस विचारधारा को देखा जा सकता और आये दिन दंगों के मूल में यह अवधारणा निहित रही है।

वैश्विकरण ने असमान आर्थिक विकास किया है राष्ट्रों के बीच संसाधनों पर कब्जा जमाने की होड़ है। हथियारों का बाजार रोज बढ़ रहा है। वातावरण को प्रदूषित किया जा रहा है। लाभ, लाभ केवल लाभ के रास्तें पर दुनिया चल पड़ी है। यह तबाही का ही रास्ता है।

बड़ी अजीव बिडम्वना है कि शांति दूत बुद्व के नाम का प्रयोग परमाणु बम परीक्षण के लिए किया गया। वर्तमान समय की समस्याओं को देखें तो और उनका दर्शन कहता है कि हर समस्या का कोई न कोई कारण अवश्य है और उसका निवारण भी है। धर्म पर आधारित प्रायोजित आतंकवाद ने तो दुनिया का अस्तित्व ही संकट में डाल दिया है। बुद्व ने मुक्ति का आश्वासन नहीं दिया। उन्होंने कहा कि मैं मार्गदाता हूँ, मोक्षदाता नहीं। पूँजीवाद की लाभ की अवधारणा ने पूरी दूनिया में आर्थिक संकट को आतंकवाद, जातिवाद, धार्मिक कट्टरता के रूप में अपना अस्त्र बनाकर खड़ा कर लिया है। ऐसे में बौद्व दर्शन कहता है कि मैं धनियों (अमीर लोगों) को देखता हूँ जो मूर्खतावश अधिक से अधिक संग्रह ही करते रहते है। कभी भी किसी को कुछ नहीं देते, नये–नये ऐश्वर्य के लिए उनकी तृष्णारूपी प्यास बढ़ती रहती है। राजाओं को देखता हूँ कि जिनका राज्य समृद्धि तक पहुँच गया है। किंतु अब समुद्र पार साम्राज्य स्थापित करने के लिए दुखी है। तृष्णा में पड़े हुए राजा और प्रजा दोनो ही मर जाते है। बुद्ध ने तृष्णा और लोभ को वश में रखने पर बल दिया।

बौद्ध दर्शन एक ऐसी ऐहिक प्रणाली है जिसका केन्द्र बिन्दु केवल मात्र मनुष्य है। बुद्ध ने कर्मफल और दैववाद जैसे मानव विरोधी दार्शनिक विचारधारओं का खण्डन किया। मानवीय आचरण को बुद्ध ने एक निश्चित व्यवस्था दी थी। ईश्वर और आत्मा की सत्ता को स्वीकार किए बिना मनुष्य दुखों को जान सकता है और इसी ऐहिक जीवन में निर्वाण को प्राप्त कर सकता है। बौद्ध दर्शन में नैतिक कर्म प्रधानता है। बुद्ध ने अहिंसा को आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया नियम के रूप में नहीं। बुद्ध के अहिंसा का सिद्धान्त धार्मिक न होकर आर्थिक और सामाजिक है। बुद्ध द्वारा बताए गये अष्टांगिक मार्ग व पंचशील के सिद्वांत वर्तमान समय की परिस्थितियों में भी उतने ही महत्वपूर्ण है जितना कि पिछले दौर में रहे है।

अष्टांग मार्ग में –

1. सम्यक दृष्टि आर्य सत्यों का ज्ञान
2. सम्यक संकल्प – आर्य मार्ग पर चलने का दृढ़ निश्चय।
3. सम्यक वाक–वाणी की पवित्रता और सत्यता
4. सम्यक कर्मान्त – यह हिंसा द्वेष और दुराचरण का त्याग तथा सत्कर्मो का आचरण है।
5. सम्यक आजीव – यह न्यायपूर्ण जीवकोपार्जन है।
6. सम्यक व्यायाम – यह शुभ की उत्पत्ति और अशुभ के निरोध हेतु सतत् प्रयत्न है।
7. सम्यक स्मृति – यह शारीरिक तथा मानस योग्य वस्तुओं एवं काम, मोह लोभ आदि भावों की अनित्यता और अशूचिता की निरन्तर भावना एंव चित्त की एकाग्रता है
8. सम्यक समाधि – यह चित्त की एकाग्रता द्वारा निर्विकल्प प्रज्ञा की अनुभूति है।

बुद्ध ने इसे मध्यम मार्ग की भी संज्ञा दी है। शील के पांच सिद्धातों में सत्कर्मो को करना और असत्कर्मो से बचना बताया है। अहिंसा, अस्तेय, सत्य तथा ब्रह्मचर्य का पालन और मदिरा आदि नशीली वस्तुओं का त्याग करना सिखाया है।

बौद्ध दर्शन हमें मानसिक गुलामी से आजाद कर सकता है, तथा हमारी उन्नाति और मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। बौद्ध दर्शन में विश्व शांति और मानव मुक्ति के मार्ग में कोई जाति व धर्म का बंधन नही है। इसमें किसी पंथ या सम्प्रदाय का भी बंधन नही है। इससे किसी व्यक्ति विशेष स्त्री–पुरूष तथा अमीर–गरीब का भी बंधन नहीं है। इसमें किसी काल –समय, पूजा–पाठ तथा कर्मकाण्ड और पाखण्ड का भी बंधन नही है। सुख से जीने और दूसरों को भी सुख शांति से जीने देने का दर्शन है, बुद्ध के अहिंसा का सिद्धांत विकास से संबंधित आन्दोलन था। आज हमें युद्ध नहीं बुद्ध की जरूरत है।

सन्दर्भ–सूची

1. डा0बी0आर अम्वेडकर अनुवाद सिद्धार्थ स्वरूप बौद्ध – बुद्ध और उसका धम्म, धम्मभूमि प्रकाशन मलोखड़ा पलवल हत्यिावा मार्च 2015
2. चन्दधर शर्मा – भारतीय दर्शन आलोचन और अनुशीलन मोतीलाल बनारीलदास पब्लिथर्स दिल्ली 1995
3. दायित्ववोध – 1998 वर्ष 5 अंक 3 मार्च जून लखनऊ
4. दायित्व बोध – वर्ष 5 अंक, अप्रैल 2008 पटना
5. समयांतर – वर्ष 40 अंक 10 अगस्त 2008 दिल्ली
6. देशकाल – अगस्त 1996 दिल्ली
7. दलित आदिवासी संवाद – वर्ष 3 अंक 10 मार्च 2006 नई दिल्ली।